PRESS INFORMATION BUREAU
पत्र सूचना कार्यालय
GOVERNMENT OF INDIA
भारत सरकार

Jansatta, Delhi

Saturday, 9th April 2011, Page: 9

Width: 16.68 cms Height: 13.29 cms, Ref: pmin.2011-04-09.40.50

एंटीबायोटिक दवाओं के सेवन को लेकर शुरू होगा जागरुकता अभियान

संजीव

मुजफ्फरनगर, 8 अप्रैल। विश्व स्वास्थय संगठन (डब्लूएचओ) की पहल पर उत्तर प्रदेश स्वास्थ्य व जन कल्याण विभाग लोगों को एंटीबायोटिक दवाओं के कम होते असर और उससे पड़ने वाले प्रभाव से सचेत करेगा। लोगों को एंटीबायोटिक्स के सही इस्तेमाल के तौर-तरीकों का पता न होना और झोलाछाप डॉक्टरों के गांवों में प्रभाव के कारण लोगों में जागरुकता नहीं है। नतीजतन एंटीबायोटिक्स के आधे-अधूरे प्रभाव और सेवन से बीमारी का जीवाणु किसी और रूप में उभर सकता है जो जानलेवा है।

डब्लूएचओ हर साल सात अप्रैल को विश्व स्वास्थ्य दिवस के तौर पर मनाता है। इस बार स्वास्थ्य व जन कल्याण विभाग ने स्वास्थ्य दिवस पर लोगों को जागरूक करने का बीड़ा उठाया है। डब्लूएचओ की इस साल की थीम है 'एंटीमाइक्रोबियल रेसिस्टैंस नो एक्शन टुडे, नो क्योर टुमौरो' यानि एंटीबायोटिक्स दवाओं का कम होता असर, अगर नहीं जागे तो भविष्य में साधारण जीवाणु भी हो सकता है जानलेवा। विभाग थीम को लेकर लोगों को सचेत कर रहा है। इसके तहत हुए सेमिनार में प्रदेश के वरिष्ठ चिकित्सक और जिला क्षय रोग अधिकारी डॉक्टर वीके जौहरी ने कहा कि कुशल चिकित्सक को ही इलाज करना चाहिए। झोलाछाप डॉक्टरों को यह ज्ञान नहीं होता कि एंटीबायोटिक दवा का रोगी के ऊपर सही इस्तेमाल कैसे किया जाए। रोगी को कौन से रोग में एंटीबायोटिक लाभप्रद हो सकती है और दवाई कितनी मात्रा में कितने दिन तक देनी है। इसके नकारात्मक प्रभाव कुशल चिकित्सक ही बता सकता है। बगैर जानकारी दवाई लेना और छोड़ देने से प्रतिरोध पैदा हो जाता है जिससे वह काम नहीं करता और एंटीबायोटिक बेकार हो जाता है। प्रतिरोध के बाद दिए जाने वाले एंटीबायोटिक का असर खत्म हो जाता है और इस कारण कुछ बैक्टीरिया पुनः पैदा हो जाते हैं। बैक्टीरिया के आनुवांशिक प्रकार में बदलाव से नया बैक्टीरिया पैदा हो जाता है।

रेडक्रॉस सोसायटी के सचिव डॉक्टर बीएस सांगवान ने कहा कि लोगों को किसी भी बीमारी के बीच में इलाज नही छोड़ना चाहिए क्योंकि लक्षण शरीर से पहले समाप्त होते हैं लेकिन बैक्टीरिया देर से समाप्त होते हैं। एडिशनल सीएमओ डॉक्टर ज्ञानेंद्र कुमार ने बताया कि विश्व में पहली बार एंटीबायोटिक दवा पैनीसिलीन 1940 में विकसित की गई थी। तभी से इस दिशा में शोध हो रहे हैं। एचआईवी, टीबी, हैजा और मलेरिया जैसे रोगों का इलाज नियंत्रण में है। लेकिन चिंता का विषय है कि जीवनरक्षक एंटीबायोटिक दवाओं का प्रयोग कम होना क्योंकि लोग इसके सही इस्तेमाल के बारे में जागरूक नहीं हैं। हल्का बुखार भी जानलेवा हो सकता है। सही एंटीबायोटिक्स न लेने से बैक्टीरिया की शक्ति बढ़ती है और दवाएं बेअसर होती हैं। कभी भी एंटीबायोटिकऔर दूसरी दवाएं सीधे मेडिकल स्टोर से नहीं लेनी चाहिए। विदेशों में बगैर चिकित्सक के पर्चे के दवाएं नहीं मिलती। लेकिन हमारे देश में लोग दवाओं का नाम लेकर खरीदते हैं और सेवन करते हैं जबकि उन्हें उसके प्रभाव का ठीक से पता भी नहीं होता।

सीएमओ परिवार कल्याण डॉक्टर उमाशंकर और सीएमओ डॉक्टर आनंद स्वरूप ने कहा कि डब्लूएचओ की रेडक्रॉस सोसायटी को दी गई थीम का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है। एंटीबायोटिक्स दवाओं के कम होते असर पर लोगों को जागरूक कर उनकी सोच विकसित की जा रही है कि वह खुद चिकित्सक की भूमिका न निभाएं। सही चिकित्सक से दवा लें जिसका प्रभाव सही हो। नहीं तो भविष्य में समाज में कोई गंभीर बीमारी फैल सकती है।